



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	21-6-23	4	3-6

युवा मशरूम उत्पादन को स्वरोजगार के रूप में अपनाएं

जागरण संगठनदाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान में मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का समापन किया गया। प्रशिक्षण में हरियाणा प्रांत के विभिन्न जिलों जैसे हिसार, फतेहाबाद, जींद, भिवानी, करनाल, पानीपत, रोहतक, रेवाड़ी के प्रशिक्षणार्थियों ने भी भाग लिया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जिसे कम से कम लागत में शुरू किया जा सकता है। भूमिहीन, शिक्षित एवं अशिक्षित युवक व युवतियां इसे स्वरोजगार के रूप में अपना सकते हैं तथा सारा वर्ष भी मशरूम की



प्रशिक्षण के समापन अवसर पर उपस्थित विशेषज्ञ व प्रशिक्षणार्थी। • विज्ञापित

विभिन्न प्रजातियों जिनमें सफेद बटन मशरूम, ओयस्टर या ढींगरी, मिल्की या दूधिया मशरूम, धान के पुवाल की मशरूम इत्यादि उगाकर सारा साल मौसम के हिसाब से इसका उत्पादन किया जा सकता है। सरकार द्वारा भी किसानों तथा बेरोजगार युवाओं को इसे एक व्यवसाय के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि मशरूम एक संतुलित आहार

है इसमें कई तरह के पौष्टिक तथा औषधीय गुण मौजूद होते हैं, जिसके फलस्वरूप इसके नियमित सेवन से मनुष्य में रोगों एवं विकारों से बचाव में सहायक होती है। विश्वविद्यालय के कुलसचिव एवं विस्तार शिक्षा निदेशक डा. बलवान सिंह मंडल ने बताया कि सफेद बटन मशरूम के अलावा दूसरी कई तरह की मशरूम की प्रजातियों को भी बढ़ावा देने के लिए लोगों को जागरूक किया जा

रहा है। संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डा. अशोक कुमार गोदारा ने बताया कि अभी हाल ही में हरियाणा प्रान्त में 21500 मीट्रिक टन मशरूम का उत्पादन हुआ। उसमें लगभग 99 प्रतिशत से ज्यादा उत्पादन सफेद बटन मशरूम का ही है। दिल्ली, लुधियाना, चंडीगढ़ के इलावा कई अन्य छोटे बड़े शहरों के साथ-साथ गांवों में भी इसकी मांग बनी रहती है। प्रशिक्षण के आयोजक डा. सतीश कुमार ने बताया कि ढींगरी व दूधिया मशरूम का उत्पादन भी लिया जा सकता है। प्रशिक्षण में विशेषज्ञ डा. जगदीप सिंह, डा. डीके शर्मा, डा. राकेश कुमार चुघ, डा. विकास काम्बोज, डा. अमोधवर्षा, डा. निर्मल कुमार, डा. संदीप भाकर, डा. सरोज यादव, डा. भूपेन्द्र सिंह, डा. पवित्रा पुनिया ने व्याख्यान दिए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अज्ञीत समाचार	21-6-23	5	4-6

बेरोजगार व भूमिहीन युवा मशरूम उत्पादन को स्वरोजगार के रूप में अपनाएं : प्रो. काम्बोज

हकृति में मशरूम उत्पादन तकनीक पर व्यावसायिक प्रशिक्षण का समापन हुआ



मशरूम उत्पादन तकनीक पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण के समापन अवसर पर उपस्थित विशेषज्ञ व प्रशिक्षणार्थी।

हिसार, 20 जून (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान में मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का समापन किया गया। इस प्रशिक्षण में हरियाणा प्रांत के विभिन्न जिलों जैसे हिसार, फतेहाबाद, जींद, भिवानी, करनाल, पानीपत, रोहतक, रेवाड़ी के प्रशिक्षणार्थियों ने भी भाग लिया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि

मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जिसे कम से कम लागत में शुरू किया जा सकता है। भूमिहीन, शिक्षित एवं अशिक्षित युवक व युवतियां इसे स्वरोजगार के रूप में अपना सकते हैं तथा सारा वर्ष भी मशरूम की विभिन्न प्रजातियों जिनमें सफ़ेद बटन मशरूम, ओयस्टर या ढींगरी, मिल्की या दूधिया मशरूम, धान के पुवाल की मशरूम इत्यादि उगाकर सारा साल मौसम के हिसाब से इसका उत्पादन किया जा सकता है। सरकार द्वारा भी किसानों तथा बेरोजगार युवाओं को इसे एक व्यवसाय के रूप में अपनाने

के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसलिए भूमिहीन या बेरोजगार युवा मशरूम उत्पादन को स्व-रोजगार के रूप में अपनाएं।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव एवं विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने बताया कि सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान सफ़ेद बटन मशरूम के अलावा दूसरी कई तरह की मशरूम की प्रजातियों को भी बढ़ावा देने के लिए लोगों को जागरूक कर रहा है। संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने बताया कि अभी हाल ही में हरियाणा प्रांत में 21500 मैट्रिक टन मशरूम का उत्पादन हुआ, जिसमें लगभग 99 प्रतिशत से ज्यादा उत्पादन सफ़ेद बटन मशरूम का ही है। दिल्ली, लुधियाना, चंडीगढ़ के इलावा कई अन्य छोटे बड़े शहरों के साथ साथ गावों में भी इसकी मांग बनी रहती है और इसको बेचने में किसी तरह की दिक्कत नहीं होती है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच सह	21-6-23	5	7-8

बेरोजगार व भूमिहीन युवा मशरूम उत्पादन को स्वरोजगार के रूप में अपनाएं: प्रो. काम्बोज

● हकृति में प्रशिक्षण का हुआ समापन

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान में मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का समापन किया गया। इस प्रशिक्षण में हरियाणा प्रांत के विभिन्न जिलों जैसे हिसार, फतेहाबाद, जींद, भिवानी, करनाल, पानीपत, रोहतक, रेवाड़ी के प्रशिक्षणार्थियों ने भी भाग लिया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जिसे कम से कम लागत में शुरू किया जा सकता है। भूमिहीन, शिक्षित एवं अशिक्षित युवक व युवतियां इसे स्वरोजगार के रूप में अपना सकते हैं तथा सारा वर्ष भी मशरूम की विभिन्न प्रजातियों जिनमें सफेद बटन मशरूम, ओयस्टर या ढींगरी, मिल्की या दूधिया मशरूम, धान के पुवाल की मशरूम इत्यादि उगाकर सारा साल मौसम के हिसाब से इसका उत्पादन किया जा सकता है।

सरकार द्वारा भी किसानों तथा बेरोजगार युवाओं को इसे एक व्यवसाय के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

इसलिए भूमिहीन या बेरोजगार युवा मशरूम उत्पादन को स्व-रोजगार के रूप में अपनाएं। विश्वविद्यालय के कुलसचिव एवं विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मण्डल ने बताया कि सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान सफेद बटन मशरूम के अलावा दूसरी कई तरह की मशरूम की प्रजातियों को भी बढ़ावा देने के लिए लोगों को जागरूक कर रहा है।

संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने बताया कि अभी हाल ही में हरियाणा प्रान्त में 21500 मैट्रिक टन मशरूम का उत्पादन हुआ, जिसमें लगभग 99 प्रतिशत से ज्यादा उत्पादन सफेद बटन मशरूम का ही है। दिल्ली, लुधियाना, चंडीगढ़ के इलावा कई अन्य छोटे बड़े शहरों के साथ साथ गांवों में भी इसकी मांग बनी रहती है और इसको बेचने में किसी तरह की दिक्कत नहीं होती है। इस प्रशिक्षण में विशेषज्ञ डॉ. जगदीप सिंह, डॉ. डी के शर्मा, डॉ. राकेश कुमार चुघ, डॉ. विकास काम्बोज, डॉ. अमोधवर्षा, डॉ. निर्मल कुमार, डॉ. संदीप भाकर, डॉ. सरोज यादव, डॉ. भूपेन्द्र सिंह, डॉ. पवित्रा पुनिया सहित अन्य विशेषज्ञों ने अपने-अपने संबंधित विषयों में व्याख्यान दिए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	21.6.23	10	3-4

बेरोजगार व भूमिहीन युवा मशरूम उत्पादन को स्वरोजगार के रूप में अपनाएं : कुलपति

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने कहा है कि मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जिसे कम से कम लागत में शुरू किया जा सकता है। भूमिहीन, शिक्षित एवं अशिक्षित युवक व युवतियां इसे स्वरोजगार के रूप में अपना सकते हैं तथा सारा वर्ष भी मशरूम की विभिन्न प्रजातियों जिनमें सफेद बटन मशरूम, ओयस्टर या दीगरी, निल्की या दूधिया मशरूम, धान के पुवाल की मशरूम इत्यादि उगाकर सारा साल मौसम के हिसाब से

■ एचएयू में इसका उत्पादन किया जा सकता है। कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज विश्वविद्यालय के सायना मेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान में मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण के समापन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। इस प्रशिक्षण में हरियाणा प्रांत के विभिन्न जिलों जैसे हिसार, फतेहबाद, जींद, भिवानी, करनाल, पानीपत, रोहतक, रेवाड़ी के प्रशिक्षणार्थियों ने भी भाग लिया। इस मौके पर

विश्वविद्यालय के कुलसचिव एवं विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल, संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक कुमार गोदर्रा, डॉ. सतीश कुमार, विशेषज्ञ डॉ. जगदीप सिंह, डॉ. डीके शर्मा, डॉ. राकेश कुमार चुध, डॉ. विकास कम्बोज, डॉ. अमोघवर्षा, डॉ. निर्मल कुमार, डॉ. संदीप भाकर, डॉ. सरोज यादव, डॉ. भूपेन्द्र सिंह, डॉ. पवित्रा पूनिया आदि विशेषज्ञों ने व्याख्यान दिए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	20.06.2023	--	--

हकृषि में मशरूम उत्पादन तकनीक पर व्यावसायिक प्रशिक्षण संपन्न

मशरूम ऐसा व्यवसाय जिसे कम से कम लागत में शुरू किया जा सकता है : प्रो. कांबोज

सिटी पल्स न्यूज, हिंसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिंसार के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान में मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का समापन किया गया। इस प्रशिक्षण में हरियाणा प्रांत के विभिन्न जिलों जैसे हिंसार, फतेहवाड़, जींद, भिवानी, करनाल, पानीपत, रोहतक, रेवाड़ी के प्रशिक्षार्थियों ने भी भाग लिया।

कुलपति प्रो. बी.आर. कांबोज ने बताया कि मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जिसे कम से कम लागत में शुरू किया जा सकता है। भूमिहीन, शिक्षित एवं अशिक्षित युवक व युवतियां इसे स्वरोजगार के रूप में अपना सकते हैं तथा सारा वर्ष भी मशरूम की विभिन्न प्रजातियों जिनमें



व्यावसायिक प्रशिक्षण के समापन अवसर पर मौजूद प्रशिक्षार्थी व अधिकारी।

सफेद बटन मशरूम, ओयस्टर या डोंगरी, मिल्की या दूधिया मशरूम, धान के पुवाल की मशरूम इत्यादि उगाकर सारा साल मौसम के हिसाब से इसका उत्पादन किया जा सकता है। सरकार द्वारा भी किसानों तथा बेरोजगार युवाओं को इसे एक व्यवसाय के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसलिए

भूमिहीन या बेरोजगार युवा मशरूम उत्पादन को स्व-रोजगार के रूप में अपनाएं।

कुलसचिव एवं विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मण्डल ने बताया कि सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान सफेद बटन मशरूम के अलावा दूसरे कई तरह की मशरूम

की प्रजातियों को भी बढ़ावा देने के लिए लोगों को जागरूक कर रहा है। संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक कुमार गोदरा ने बताया कि अभी हाल ही में हरियाणा प्रांत में 21500 मैट्रिक टन मशरूम का उत्पादन हुआ, जिसमें लगभग 99 प्रतिशत से ज्यादा उत्पादन सफेद बटन मशरूम का ही है। इस प्रशिक्षण के आयोजक डॉ. सतीश कुमार ने बताया कि हरियाणा में जवदातर किसान केवल सर्दी के मौसम में सफेद बटन खुब की काश्त करते हैं किन्तु इसके अलावा दूसरी मशरूम जैसे डोंगरी व दूधिया मशरूम का उत्पादन भी लिया जा सकता है किन्तु लोगों में अज्ञानता की वजह से लोग दूसरी खुबों का सेवन नहीं करते और खुब उत्पादकों द्वारा इन खुबों की बिजने में दिक्कत महसूस होती है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	20.06.2023	--	--

मशरूम उत्पादन को स्वरोजगार के रूप में अपनाएं युवा : प्रो. काम्बोज



नभ-छोर स्पेशल 20 जून
हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सरयवा नेहरू कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान में मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का समापन किया गया। इस प्रशिक्षण में हरियाणा प्रान्त के विभिन्न जिलों जैसे हिसार, फतेहाबाद, जींद, भिवाड़ी, करनाल, सोनीपत, रोहताक, रेवाड़ी के प्रतिभागियों ने भी भाग लिया। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. बी.अर. काम्बोज ने बताया कि मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जिसे कम से कम लागत में शुरू किया जा सकता है। बुमिलीन, रिबिल एवं अरिथित युवक व युवतियां इसे स्वरोजगार के रूप में अपना सकते हैं तथा साथ ही भी मशरूम की विभिन्न प्रजातियों जिनमें सफेद बटन मशरूम, ओवरस्टार या खींगरी, मैकली या दुधिया मशरूम, घान के युक्त की मशरूम इत्यादि उत्पन्न करा जाते हैं। इनमें से किसी एक के उत्पादन किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि मशरूम एक

संगठित आहार है इसमें कई तरह के पीटिक तथा औषधीय गुण मौजूद होते हैं, जिसके फलस्वरूप इसके नियमित सेवन से यकृत में योग्य एवं चिकनी से बचाव में सहायक होती है। मशरूम उत्पादन के लिए कृषि अवशेषों का इस्तेमाल किया जाता है जिससे खाद्य सुरक्षा की सुनिश्चिता के साथ-साथ वायु प्रदूषण से भी निजात मिलेगी। विश्वविद्यालय के कुलसचिव एवं विभागाध्यक्ष शिक्षा निदेशक डॉ. कलवान सिंह मण्डल ने बताया कि सरयवा नेहरू कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान सफेद बटन मशरूम के अलावा दूसरी कई तरह की मशरूम की प्रजातियों को भी बढ़ावा देने के लिए लोगों को जागरूक कर रहा है। संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक कुमार गोयरा ने बताया कि अभी हाल ही में हरियाणा प्रान्त में 21500 मेट्रिक टन मशरूम का उत्पादन हुआ, जिसमें लगभग 99 प्रतिशत से ज्यादा उत्पादन सफेद बटन मशरूम का ही है। दिल्ली, गुजरात,

चंडीगढ़ के अलावा कई अन्य छोटे बड़े शहरों के साथ साथ गांवों में भी इसकी मांग बनी रहती है और इसका बेचने में किसी तरह की दिक्कत नहीं होती है। इस प्रशिक्षण के अलावा डॉ. सतीश कुमार ने बताया कि हरियाणा में ज्यादातर किसान केवल सर्दियों के मौसम में सफेद बटन खुम्बू की फासत करते हैं किन्तु इसके अलावा दूसरी मशरूम जैसे खींगरी व दुधिया मशरूम का उत्पादन भी किया जा सकता है किन्तु लोगों में अज्ञानता की वजह से लोग दूसरी खुम्बू का सेवन नहीं करते और खुम्बू उत्पादकों द्वारा इन खुम्बू की बिक्री में दिक्कत महसूस होती है। इस प्रशिक्षण में विशेषज्ञ डॉ. जगदीप सिंह, डॉ. डी के शर्मा, डॉ. राकेश कुमार चुन, डॉ. विक्रम काम्बोज, डॉ. अमोघचर्मा, डॉ. निर्मल कुमार, डॉ. संदीप साकर, डॉ. सरोज पादव, डॉ. रूपेंद्र सिंह, डॉ. पवित्रा पुनिया सहित अन्य विशेषज्ञों ने अपने-अपने संबोधित विषयों में ज्ञानदान दिए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	21.06.2023	--	--

बेरोजगार व भूमिहीन युवा मशरूम उत्पादन को स्वरोजगार के रूप में अपनाएं : प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान में मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का समापन किया गया। इस प्रशिक्षण में हरियाणा प्रांत के विभिन्न जिलों जैसे

हक्कवि में मशरूम उत्पादन तकनीक पर व्यावसायिक प्रशिक्षण का समापन हुआ

हिसार, फतेहाबाद, जींद, भिवानी, करनाल, पानीपत, रोहतक, रेवाड़ी के प्रशिक्षणार्थियों ने भी भाग लिया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जिसे कम से कम लागत में शुरू किया जा सकता है। भूमिहीन, शिक्षित एवं

अशिक्षित युवक व युवतियां इसे स्वरोजगार के रूप में अपना सकते हैं तथा सारा वर्ष भी मशरूम की

प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसलिए भूमिहीन या बेरोजगार युवा मशरूम उत्पादन को स्व-रोजगार के रूप में



विभिन्न प्रजातियों जिनमें सफ़ेद बटन मशरूम, ओयस्टर या ढोंगरी, मिलकी या दूधिया मशरूम, धान के पुवाल की मशरूम इत्यादि उगाकर सारा साल मौसम के हिसाब से इसका उत्पादन किया जा सकता है। सरकार द्वारा भी किसानों तथा बेरोजगार युवाओं को इसे एक व्यवसाय के रूप में अपनाने के लिए

अपनाएं। उन्होंने बताया कि मशरूम एक संतुलित आहार है इसमें कई तरह के पौष्टिक तथा औषधीय गुण मौजूद होते हैं, जिसके फलस्वरूप इसके नियमित सेवन से मनुष्य में रोगों एवं विकारों से बचाव में सहायक होती है। मशरूम उत्पादन के लिए कृषि अवशेषों का इस्तेमाल किया जाता है।